उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया: व्याख्या के आधार

अध्याय 7

पवित्र शास्त्र को लागू करना

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना....1

अनिवार्यता....3

संबंध....5

परमेश्वर....5

सनातन मनसा....6

चरित्र....7

वाचा वाली प्रतिज्ञाएं....7

संसार....8

लोग....9

पापी स्वरूप....9

धार्मिक विभाजन....10

वर्ग....11

विकास....12

युगांतरिक....12

सांस्कृतिक....14

व्यक्तिगत....16

उपसंहार....16

उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया:
व्याख्या के आधार

अध्याय सात

पवित्र शास्त्र को लागू करना

प्रस्तावना

हम सभी जानते हैं कि सामान्य जीवन में हम कुछ चीज़ों को अस्थायी उपयोग के लिए और अन्यों को बहुत लंबे समय तक उपयोग के लिए लिख लेते हैं। अच्छा तो, मसीह के अनुयायियों के लिए, निश्चित रूप से एक पुस्तक है जो कभी भी पुरानी नहीं होगी: यानी बाइबल। पीढ़ी दर पीढ़ी, परमेश्वर के लोगों ने पवित्र शास्त्र को सराहा है — और हमें करना चाहिए, क्योंकि बाइबल में हर स्थान और हर युग में परमेश्वर के लिए जीवन जीने के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। यीशु ने बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में देखा जो तब तक परमेश्वर के लोगों के लिए मानक बना रहेगा जब तक सब कुछ पूरा नहीं हो जाता है। और उसके अनुयायियों के रूप में, हम भी ऐसा ही करते हैं।

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया* का यह सातवां अध्याय है: *व्याख्या के आधार* और हमने इसका शीर्षक रखा है "पवित्र शास्त्र को लागू करना।" इस अध्याय में, हम अनुप्रयोग के लिए कुछ दृष्टिकोणों को सुझाएंगे जो आधुनिक श्रोताओं के लिए पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ को प्रासंगिक बनाने में बहुत उपयोगी हैं।

इस श्रृंखला में, हम अनुप्रयोग की प्रक्रिया को इस प्रकार परिभाषित करेंगे:

> बाइबल के दस्तावेज़ के मूल अर्थ को समकालीन श्रोताओं से उन तरीकों में उचित रीति से जोड़ना जो उनकी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करते हैं।

चूंकि यह परिभाषा, मूल अर्थ की हमारी पहले वाली परिभाषा का उपयोग करती है, इसलिए यह याद रखने में मददगार हो सकता है कि मूल अर्थ है:

> वे अवधारणाएं, व्यवहार और भावनाएं जिन्हें दिव्य और मानव लेखकों ने संयुक्त रूप से इसके पहले श्रोताओं को बताने के लिए, दस्तावेज को अभिप्रेत किया था।

> हमें यह समझने की आवश्यकता है कि लेखक ने वास्तव में क्या कहा, और फिर हम अनुप्रयोग बना सकते हैं। अनुच्छेद के अर्थ से अनुप्रयोग को आना चाहिए, और उस मूल को उसकी हद तक जानना, यह समझने में हमारी मदद कर सकता है, कि क्या हम इसके मूल श्रोताओं के समान ही उसी ईश्वरीय-ज्ञान वाले दृष्टिकोण में हैं कि नहीं? क्या हम मूसा की वाचा के अधीन हैं? क्या हम किसी विशेष वाचा के अधीन हैं? और इसलिए, मूल सेटिंग, इतिहास, ईश्वरीय-ज्ञान और संदर्भगत को समझने से हमें इस पूरे अनुच्छेद को ठीक से समझने में मदद मिलती है। हम अब जानते हैं कि क्या हमें उस अर्थ को मसीह के पूर्ण कार्य के माध्यम से समझना है, क्योंकि अब हम मसीह के पूर्ण कार्य के आधीन हैं।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. ब्रेमर

अब, अनुप्रयोग की प्रक्रिया हमेशा आसान नहीं होती है, क्योंकि हमें उन महत्वपूर्ण विकासों का हिसाब रखना है जो उन समयों के बीच घटित हुए, जब बाइबल को लिखा गया था और अब हमारा अपना समय। लेकिन अनुप्रयोग की प्रक्रिया का लक्ष्य अब भी वैसा ही है जैसा तब था जब पवित्र शास्त्र को पहली बार लिखा गया था: परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप परमेश्वर के लोगों की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करना।

मूल अर्थ और अनुप्रयोग के बीच हम जो सबसे महत्वपूर्ण अंतर बना सकते हैं वह है कि मूल अर्थ की हमारी जाँच उस प्रभाव पर केंद्रित होती हो, जिसको इसके पहले श्रोताओं की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं पर होने के लिए पवित्र शास्त्र को अभिप्रेत किया गया था। लेकिन अनुप्रयोग की व्याख्यात्मक प्रक्रिया इस बात से संबंधित है कि कैसे आधुनिक श्रोताओं को इन सभी स्तरों पर प्रभावित किया जाना चाहिए।

पाठ्यांश का मूल अर्थ हमारे अनुप्रयोग के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पाठ्यांश का प्रेरित और आधिकारिक अर्थ है। इसलिए, किसी भी पाठ्यांश का उचित आधुनिक अनुप्रयोग इसके मूल अर्थ के लिए हमेशा सच्चा होना चाहिए। इसी समय पर, हमारे आधुनिक अनुप्रयोगों को भी कुछ मायनों में मूल अर्थ से आगे जाना चाहिए, क्योंकि उन्हें आधुनिक समयों, संस्कृतियों और व्यक्तियों को ध्यान में रखना होगा।

> बाइबल के अनुच्छेद के मूल अर्थ को जानने से हमें इसे अपने जीवनों में लागू करने में मदद मिलती है, क्योंकि हम पहचान लेते हैं कि इसके मूल अर्थ का एक प्रमुख घटक इसके मूल उद्देश्य को समझना है, अर्थात, वह परिवर्तन जिसे इसके पहले श्रोताओं में, इसके पहले पाठकों में, उनकी परिस्थिति के प्रकाश में, उनके संदर्भ के दायरे में घटित होने के लिए परमेश्वर ने उस पाठ्यांश को डिजाइन किया था, कि सताव, परीक्षाओं के प्रकाश में जिनका वे सामना कर रहे थे, उस घड़ी वे कितना पवित्र शास्त्र को जानते थे या उस तक कितनी पहुँच थी। यह उनके लिए परमेश्वर का अनुप्रयोग था। अर्थ वास्तव में यह था कि उनके जीवनों में उसके पवित्र आत्मा के पवित्र करने वाले उद्देश्य को प्रभावित करने के लक्ष्य को कार्यरत करना। ठीक है, उनके जीवनों में आत्मा का उद्देश्य हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा के उद्देश्य के साथ निरंतरता है। इसलिए जितना अधिक हम उनकी स्थिति, उनकी आवश्यकता, और इस कारण उस उद्देश्य को समझ सकते हैं जिसके लिए परमेश्वर ने मूल सेटिंग में और मूल श्रोताओं को वह पाठ्यांश दिया, तो आत्मा हमारे जीवन, हमारी परिस्थिति में उस पाठ्यांश को कैसे लागू करना चाहता है, इसके लिए यह एक दिशा को निर्धारित करता है। और जिस तरह से हम पाठ्यांश को लागू करते हैं तो एक पादरी, प्रचारक, शिक्षक के रूप में इसे हमारा मार्गदर्शक होना चाहिए। हम पूछते हैं कि परमेश्वर ने इसे बदलाव लाने के लिए कैसे अभिप्रेत किया, उस समय उनके जीवनों में बदलाव लाने के लिए और फिर आज मसीह के स्वरूप में अधिक से अधिक ढालने के पवित्र आत्मा के उद्देश्य को यह कैसे पूरा करता है?
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

अनुप्रयोग की प्रक्रिया पर हमारी चर्चा तीन मुद्दों पर होगी: सबसे पहले, हम अनुप्रयोग की अनिवार्यता पर विचार करेंगे। दूसरा, हम मूल अर्थ और आधुनिक श्रोताओं के बीच उन संबंधों की जाँच करेंगे जो

अनुप्रयोग को संभव बनाते हैं। और तीसरा, हम उन कुछ प्रमुख विकासों पर नज़र डालेंगे जो आज के जीवन और जब बाइबल लिखी गई थी उस बीच हुए हैं। आइए अनुप्रयोग की अनिवार्यता के साथ शुरू करें।

अनिवार्यता

याकूब 1:21-25 में जिस तरीके से याकूब ने अनुप्रयोग की अनिवार्यता के बारे में बात की उसे सुनिए:

> इसलिये सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है। परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं। क्योंकि जो कोई वचन का सुननेवाला हो और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुँह दर्पण में देखता है। इसलिये कि वह अपने आप को देखकर चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि वह कैसा था। पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं — पर वैसा ही काम करता है (याकूब 1:21-25)।

याकूब ने सिखाया कि यह जानना पर्याप्त नहीं कि पवित्र शास्त्र क्या कहता है। पवित्र शास्त्र से उचित रीति से लाभ उठाने के लिए, हमें इसके द्वारा प्रभावित होना है; हमारी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को बदलना होगा। यदि हम परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करना चाहते हैं तो इस तरह के अनुप्रयोग हर विश्वासी के लिए नितांत अनिवार्य हैं। लेकिन उस प्रक्रिया के बारे में क्या जिसके परिणामस्वरूप यह अनुप्रयोग पैदा होता है? क्या यह निर्धारित करने के लिए वास्तव में प्रयास करने की आवश्यकता है कि कैसे हमारी अवधारणाओं, व्यवहारों, और भावनाओं को प्रभावित किया जाना चाहिए?

> अच्छा तो, किसी भी व्यक्ति के दैनिक जीवनचर्या के लिए पवित्र शास्त्र को प्रासंगिक और अनुप्रयोज्य बनाने का सबसे अच्छा तरीका ... उस संदर्भ के बारे में सोचना है जिसमें पवित्र शास्त्र के मूल्य, या पवित्र शास्त्र के शिक्षण, या पवित्र शास्त्र का ईश्वरीय-ज्ञान लागू होता है। और फिर, यह उस तरह के पाठ्यांश पर निर्भर करता है जिसके साथ मैं काम कर रहा हूँ, लेकिन आमतौर पर ऐसे दृष्टिकोण हैं जो पवित्र शास्त्र में महत्वपूर्ण हैं — हम परमेश्वर के बारे में उस तरीके से क्यों सोचते हैं जिस तरह से हम अपने पड़ोसी के बारे में सोचते हैं, जिस तरह की करुणा मुझे दिखानी चाहिए, उस तरह की चीज़ — वह मुझे बताती है कि मुझे कैसे रहना चाहिए। और ये मूल्य बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। मैं सोचता हूँ कि जब हम इतिहास की एक पुस्तक या इसके ईश्वरीय-ज्ञान के संदर्भ में, सारांश के रूप में बाइबल का अध्ययन करते हैं और हम उस बात के नैतिक आयाम को नहीं जोड़ते हैं जिसे करने के लिए एवं लोगों के रूप में बनने के लिए अनुच्छेद हमें बुला रहा है, तो हमारे पास एक समस्या है। लेकिन यदि हम पवित्र शास्त्र के संबंधपरक, नैतिक आयाम को जो इसमें पाया जाता है सावधानीपूर्वक ध्यान

में रखते हैं, तो यथार्थ में, किसी भी अनुच्छेद का एक अनुप्रयोग हो सकता है जो हमें जीने के तरीके के बारे में अधिक संवेदनशीलता से सोचने के लिए बुलाता है।

— डॉ. डैरेल एल. बॉक

1 कुरिन्थियों 10:11 में, पौलुस ने इन वचनों के साथ समकालीन अनुप्रयोग की खोज के महत्व को दर्शाया:

> परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टांत की रीति पर भी और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अंतिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं (1 कुरिन्थियों 10:11)।

इस अध्याय के संदर्भ में, पौलस कोरिन्थ के विश्वासियों को याद दिला रहा था कि निर्गमन और गिनती की पुस्तकों ने उन दंडों के बारे में, कहानियों को बताया जिन्हें निर्गमन के इस्राएलियों ने सहा था क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया था। और इस पद में, उसने कोरिन्थ में कलीसिया के लिए इन कहानियों को लागू करने हेतु आवश्यक कदम उठाए।

पौलुस ने नए नियम की कलीसिया पर पुराने नियम की कहानियों को मूल श्रोताओं और अपने कोरिन्थ के श्रोताओं के बीच संबंधों या निरंतरताओं को ध्यान में रखते हुए और उन विकासों या बदलावों पर विचार करने के द्वारा लागू किया, जो मूसा के समय और उसके समय के बीच हुए थे।

एक ओर, पौलुस ने दोनों श्रोताओं को यह निवेदन करते हुए जोड़ा कि ये कहानियाँ "हमारी चेतावनी के लिए लिखी गई हैं।" इस संबंध को बनाना पौलुस के लिए मुश्किल नहीं था। निर्गमन और गितनी को मूल रूप से मिस्र से पलायन हुए इस्राएलियों की दूसरी पीढ़ी के लिए लिखा गया था। पहली पीढ़ी की विफलताओं को न दोहराने के लिए इन लोगों को चेतावनी देने हेतु इन्हें लिखा गया था। इसलिए, पौलुस ने पहले कोरिन्थ के विश्वासियों और मूल श्रोताओं के बीच समानता पर ध्यान केंद्रित किया: कोरिन्थ की कलीसिया में विफलता का खतरा था। इसलिए इन कहानियों ने उन्हें ठीक वैसे ही चेतावनी दी जैसे उन्होंने मूल श्रोताओं को चेतावनी दी थी।

दूसरी ओर, पौलुस ने अपने अनुप्रयोग को मूसा के समय से होने वाले महत्वपूर्ण विकासों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया। इस्राएल की विफलताएं पहली पीढ़ी के इस्राएलियों के साथ हुई, लेकिन उन्हें पौलुस के श्रोताओं और अन्य सभी विश्वासियों के लिए लिखा गया था। पवित्र शास्त्र के रिकॉर्ड ने पुराने नियम के अनुभवों को कलीसिया के लिए उदाहरणों और चेतावनियों में बदला, "जो जगत के अंतिम समय में रहते हैं।"

"जगत के अंतिम समय" वाली अभिव्यक्ति उन कई तरीकों में से एक है जिनमें नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के युग को नए नियम के युग से अलग किया। इन वचनों के साथ, पौलुस ने माना कि कोरिन्थ की कलीसिया के पास उद्धार वाले इतिहास में विकासों के लाभ थे जो निर्गमन एवं गिनती के श्रोताओं के पास नहीं थे। कोरिन्थ के लोग मूसा से 1000 वर्ष बाद रह रहे थे। वे मूल श्रोताओं के समान मिस्र से कनान की यात्रा पर नहीं थे; वे नए आकाश और नई पृथ्वी की यात्रा पर थे। जगत का अंतिम समय उनके करीब था। परिणामस्वरूप, कोरिन्थ के विश्वासियों के लिए पौलुस के अनुप्रयोग को उन विकासों को ध्यान में रखना था। और पौलुस ने बाकी के 1 कुरिन्थियों 10 में इन भिन्नताओं पर प्रकाश डाला, जहाँ उसने कोरिन्थ के विश्वासियों को उनके निजी मसीही जीवन में या उनकी कलीसिया में, उनके संबंधों में, असफल नहीं होने की चेतावनी दी।

कोरिन्थ में मसीहों के लिए निर्गमन और गिनती की पुराने नियम की पुस्तकों का पौलुस का अनुप्रयोग उस मूल प्रक्रिया को दर्शाता है जो हर बार तब होता है जब हम पवित्र शास्त्र को लागू करते हैं। अनुप्रयोग को

सदैव मूल और आधुनिक श्रोताओं के बीच संबंधों और उनके बीच घटित हुए विकासों दोनों को ध्यान में रखना चाहिए। यदि हम आज अपने जीवनों के लिए पवित्र शास्त्र के उपयुक्त अनुप्रयोगों को लागू करना चाहते हैं तो हमें इन संबंधों को पहचानने और इन विकासों को ध्यान में रखने की आवश्यकता होगी।

अब जबकि हमने अनुप्रयोग की अनिवार्यता को देख लिया है, तो आइए बाइबल की पुस्तकों के मूल पाठकों और आधुनिक श्रोताओं के बीच कई संबंधों और निरंतरताओं पर अपने ध्यान को लगाएं।

संबंध

यह प्राचीन और आधुनिक श्रोताओं के बीच संबंध या निरंतरताएं हैं जो बाइबल के पाठ्यांशों को आधुनिक लोगों के लिए प्रासंगिक बनाते हैं। और इन निरंतरताओं का वर्णन करने के लिए अनगिनत तरीके हैं।

इस अध्याय में, हम इन संबंधों को तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित करेंगे। सबसे पहले, हम देखेंगे कि दोनों श्रोताओं का एक ही परमेश्वर है। दूसरा, वे एक जैसे संसार में रहते हैं। और तीसरा, वे एक ही तरह के लोग हैं। इस तथ्य के साथ शुरू करके कि दोनों श्रोताओं का एक ही परमेश्वर है, आइए इनमें से प्रत्येक श्रेणियों पर विचार करें।

परमेश्वर

पवित्र शास्त्र स्पष्ट रूप से कहते है कि सिर्फ एक ही परमेश्वर है जिसके प्रति पवित्र शास्त्र के सभी श्रोता अपनी निष्ठा और आज्ञाकारिता का पालन करते हैं। और जैसा कि पारंपरिक मसीही ईश्वरीय-ज्ञान सिखाता है, परमेश्वर अपरिवर्तनीय है, अर्थात वह बदलता नहीं है। चूँकि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है, और चूँकि उसके प्रति निष्ठा और आज्ञाकारिता सार्वभौमिक दायित्व है, इसलिए उस प्रभाव के बीच मज़बूत संबंध है जिन्हें इसके मूल श्रोताओं और इसके आधुनिक श्रोताओं पर होने के लिए पवित्र शास्त्र को अभिप्रेत किया गया था।

> परमेश्वर अपरिवर्तनीय है, यह कहने का अर्थ है कि वह अपने अस्तित्व, सिद्धताओं, उद्देश्यों और प्रतिज्ञाओं में अपरिवर्तित है। तो उसका अस्तित्व, उसका स्वभाव, उसका सार, उसकी सिद्धता, इन विशेषताओं को जिस हद तक वह धारण करता है, उसके उद्देश्य, जो उसने करने के लिए निर्धारित किया है, और उसकी प्रतिज्ञाएं, जो उसने हमें बताया है, वह करता हैं। इसलिए परमेश्वर इन बातों में अपरिवर्तित है। इसका अर्थ यह कहना नहीं है कि परमेश्वर हमसे एक गतिशील, संबंधपरक, व्यक्तिगत तरीके से संबंधित नहीं है। तो वह हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है, वह हमारे पाप पर शोकित होता है, वह हमारे विश्वासपात्र होने पर प्रसन्न होता है। और इसीलिए यह कहा गया है कि परमेश्वर अनिवार्य रूप से अपरिवर्तनीय है लेकिन संबंधपरक रूप से परिवर्तनशील है। एक हद है जिस तक वह अनुरूप बनता है, जो वह उसके साथ हमारे संबंध के साथ करता है, जबकि उसी समय पर वह अपने अनिवार्य गुणों को बनाए रखता है।

— डॉ. के. एरिक थोइनेस

> परमेश्वर, त्रीएक परमेश्वर, के कई महत्वपूर्ण गुणों में से एक, अपरिवर्तनशीलता है। यह वह शब्द है जो आप कई ईश्वरीय-ज्ञान के पाठ्यांशों में पाएंगे। अपरिवर्तनशीलता का अनुवाद "अपरिवर्ती" हो सकता है। और यह वास्तव में अद्‌भुत समाचार है क्योंकि हम अपने जीवनों में, अपने संसार में, अपने संबंधों में, और यहाँ तक कि स्वयं अपने क्षणभंगुर जीवन में लगभग हर चीज़ के अस्थायित्व और नश्वरता के बारे में अवगत हैं। इस परिवर्तनशील ब्रह्माण्ड में, मैं परमेश्वर के उस वर्णन को एक स्थिर-बिन्दु के रूप में मानता हूँ। वहाँ ऐसा क्या है जो हमारी बेचैन आत्माओं को ऐसे परमेश्वर के दर्शन की ओर आकर्षित करता है जो कल, आज और हमेशा एक समान है? मैं मानता हूँ कि यही वह गहन मानसिक और आत्मिक आवश्यकता जो चट्टान की तरह मज़बूत हो हम सब में है, वह जो भरोसेमंद हो, वह जो एक लंगर के समान काम कर सकता हो जब पहाड़ हिलते हैं और सब कुछ समुद्र में गिरता हुआ प्रतीत होता हो ... तो हम इस अपरिवर्तनीय परमेश्वर में स्वयं के लिए ताकत प्राप्त करते है।

— डॉ. ग्लेन स्कॉर्जी

दिव्य अपरिवर्तनशीलता वाली बाइबल की अवधारणा का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर निष्क्रिय है। बाइबल के शब्दों में, एक निष्क्रिय ईश्वर एक बेकार मूर्ति है। लेकिन पवित्र शास्त्र का परमेश्वर वास्तविक और सार्थक तरीकों से अपनी सृष्टि के साथ निरंतर पारस्परिक व्यवहार कर रहा है।

पारंपरिक मसीही ईश्वरीय-ज्ञान ने ठीक ही कहा है कि परमेश्वर की अपरिवर्तनशीलता के तीन महत्वपूर्ण पहलू हैं। पहला, परमेश्वर की सनातन मनस, या इतिहास के लिए निर्णायक योजना, अपरिवर्तनीय है।

सनातन मनसा

हालांकि विभिन्न मसीही परंपराएं परमेश्वर की अनंत योजना को अलग-अलग रीति से समझती हैं, हम सभी को इस बात से सहमत होना चाहिए कि परमेश्वर ने जो कुछ भी किया है, कर रहा है, और करेगा वह सब एक एकीकृत योजना का हिस्सा है। परमेश्वर सब कुछ जानता है, और वह उस ज्ञान का उपयोग इतिहास को उस लक्ष्य की ओर ले जाने के लिए कर रहा है जिसके लिए उसने इसकी रचना की थी। जैसा कि परमेश्वर ने यशायाह 46:10 में कहा:

> मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, 'मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा।' (यशायाह 46:10)

जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 1:4, 11 में समझाया:

> जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया ... [मसीह] में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने (इफिसियों 1:4, 11)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर की एक योजना है जिसमें सब कुछ शामिल है। और यह योजना उस समय से अस्तित्व में है जब उसने विश्वासियों को उद्धार के लिए "चुना" या पहले ही से ठहराया। बेशक, अलग-अलग परंपराएं पहले से ठहराए जाने की अवधारणा को अलग-अलग रीति से व्याख्या करते हैं। लेकिन जो बात प्रश्न से परे है, वह है कि परमेश्वर ने जगत की सृष्टि करने से पहले, पहले ही से ठहराया। पहले ही ठहराया जाना उसकी सनातन मनसा का सिर्फ एक हिस्सा था। और यह मनसा अपरिवर्तनीय है क्योंकि परमेश्वर सब कुछ को इसी के अनुरूप बनाता है।

परमेश्वर की योजना की अपरिवर्तनशीलता हमें आश्वस्त करती है कि यदि हम और अधिक बारीकी से नज़र डालें, तो प्राचीन काल में परमेश्वर के तरीके आज उसके तरीकों के साथ मेल खाते हैं। किसी स्तर पर, अपने प्राचीन लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा और हमारे लिए उसकी इच्छा समान है क्योंकि ये दोनों उसकी सृष्टि के लिए उसकी एक अपरिवर्तनीय उद्देश्य की भीतर फिट बैठते हैं।

दूसरे स्थान पर, परमेश्वर अपने चरित्र में भी अपरिवर्तनीय है। उसका सार, व्यक्ति और गुण कभी नहीं बदलते।

चरित्र

अब यह सुनिश्चित है, कि परमेश्वर अपने चरित्र के विभिन्न पहलूओं को अन्य समयों की तुलना में कभी-कभी अधिक प्रमुखता से प्रकट करता है। कभी-कभी वह अपनी दया को प्रकट करता है, तो कभी अपने क्रोध को। कभी-कभी वह अपनी सर्वज्ञता को प्रकट करता है और अन्य समयों पर वह उसे छिपाता है। लेकिन उसके गुणों का पूरा विस्तार — उसका अनंत स्वभाव — हमेशा एक समान रहता है। इसीलिए याकूब 1:17 में, याकूब ने परमेश्वर को इस रीति से संदर्भित किया:

> ... ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है (याकूब 1:17)।

परमेश्वर का अपरिवर्तनीय चरित्र हमें यह देखने में मदद करता है कि पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ और आधुनिक अनुप्रयोग के बीच हमेशा महत्वपूर्ण संबंध रहेगा। जब किसी विशेष अनुच्छेद ने एक दिव्य गुण के बारे में बात की, तो मूल श्रोताओं से उस गुण को हमेशा परमेश्वर के दूसरे गुणों के संदर्भ में समझने की अपेक्षा की गई थी। बहुत कुछ इसी तरह, आधुनिक श्रोताओं से प्रत्येक पवित्र शास्त्र की प्रमुखताओं को उन तरीकों में लागू करने की अपेक्षा की जाती है जो परमेश्वर के किसी भी गुण की अवहेलना न करता हो। इस कारण से, परमेश्वर के अपरिवर्तनीय गुण हमेशा मूल अर्थ और आधुनिक अनुप्रयोगों के बीच समानता का एक पैमाना बनाते हैं।

तीसरे स्थान पर, परमेश्वर अपनी वाचा वाली प्रतिज्ञाओं में न बदलने वाला या अपरिवर्तनीय है। परमेश्वर वह सब कुछ पूरा करेगा जो उसने कभी भी वाचा में शपथ लिया है।

वाचा वाली प्रतिज्ञाएं

कभी-कभी मसीही लोग यह सोचने की भूल करते हैं कि वह सब कुछ जो परमेश्वर कभी भी कहता है एक प्रतिज्ञा है। लेकिन वास्तविकता यह है कि परमेश्वर तभी प्रतिज्ञा करता है जब वह शपथ लेता है, या वाचा बनाता है, या किसी कसम को खाता है। जैसा कि हम गिनती 23:19 में पढ़ते हैं:

> ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे? (गिनती 23:19)।

जब परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है, तो उसका वचन अपरिवर्तनीय है। अन्यथा, वह अपने मन को बदलने के लिए स्वतंत्र है। उत्पत्ति 15 पर विचार करें जहाँ परमेश्वर ने कहा कि वह अब्राहम की संतान को सितारों के समान अनगिनत बना देगा। अब्राहम इस प्रस्ताव के लिए आभारी था, लेकिन उसने फिर भी परमेश्वर से इस आशीष को निश्चित करने के लिए कहा। इसलिए, परमेश्वर ने उसके साथ एक वाचा बाँधकर जवाब दिया।

हालांकि, ऐसे मामलों में, जहाँ परमेश्वर ने कोई प्रतिज्ञा नहीं की है, उसके वचनों को अभिशाप के खतरे और आशीष के प्रस्तावों के रूप में सबसे अच्छे से समझा जाता है। उदाहरण के तौर पर, याद कीजिए कि योना की पुस्तक में परमेश्वर ने नीनवे को नाश करने की चेतावनी दी, लेकिन फिर जब उसके लोगों ने मन फिराया तो उसने अपनी इच्छा बदल दी। इसमें कोई शक नहीं, कि परमेश्वर ने उस समय नीनवे को नाश करने के बारे में अपने मन को बदला। लेकिन जब उसने उन्हें छोड़ दिया, तो उसने किसी प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ा। वाचा वाली प्रतिज्ञाएं वे बातें हैं जिन्हें परमेश्वर ने वाचा वाली शपथ के द्वारा पूरा करने की ठानी है।

पवित्र शास्त्र में परमेश्वर का प्रत्येक प्रकाशन मानता है कि परमेश्वर अपनी वाचा और अपनी वाचा वाली प्रतिज्ञाओं को निभाएगा। मूल श्रोताओं से इस प्रकाश में पवित्र शास्त्र के प्रत्येक अनुच्छेद को समझने की अपेक्षा की गई थी, और आधुनिक श्रोताओं को भी ऐसा ही करना चाहिए। हमें परमेश्वर के अपरिवर्तनीय प्रतिज्ञाओं में पूर्ण भरोसा होना चाहिए। और उसके प्रस्तावों और चेतावनियों को हमें आज्ञाकारिता के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

अब जबकि हमने देख लिया है कि पवित्र शास्त्र के सभी पहले प्राप्तकर्ताओं के रूप में हमारे पास भी वही परमेश्वर है, तो आइए इस तथ्य पर ध्यान दें कि हम एक जैसे संसार में ही रहते हैं।

संसार

युगों के दौरान दार्शनिकों ने इसके साथ संघर्ष किया है कि क्या संसार स्थिर है या बदल रहा है। आम अनुभव हमें बताते हैं कि, कई मायनों में, दोनों सही हैं। परमेश्वर की सृष्टि हमेशा बदलती रही है, लेकिन संसार की कई विशेषताएं पवित्र शास्त्र के प्रत्येक श्रोताओं के लिए स्थिर बनी हुई हैं। जब हम पवित्र शास्त्र को अपने समय में लागू करते हैं, तो हमें इन दोनों सच्चाईयों को ध्यान में रखना चाहिए।

एक पुरानी कहावत है जो कहती है कि “इतिहास स्वयं को दोहराता है,” और हम समझते हैं कि वर्तमान की घटनाएं अक्सर अतीत में हुई घटनाओं से मेल खाती हैं। पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं के समान, हम परमेश्वर द्वारा बनाए गए संसार में रहते हैं। और यद्यपि हम पाप में गिर गए हैं, फिर भी हमने परमेश्वर के उद्धार का अनुभव किया है। पुराने नियम में परमेश्वर के विश्वासपात्र लोगों को अन्य लोगों और शैतानी शक्तियों के विरोध का सामना करना पड़ा, और हम आज उसी तरह के विरोध का सामना करते हैं। विजय पाने के लिए वे परमेश्वर की मदद पर निर्भर थे; हम भी उसकी मदद पर निर्भर हैं। हम उस स्थिरता को भी देख सकते हैं जिसे हम अक्सर प्रकृति के नियमित पैटर्न या नियम कहते हैं। जब पवित्र शास्त्र सूर्य के उदय और अस्त होने, मानव बीमारी, भोजन और पानी की आवश्यकता, और अनगिनत ऐसी अन्य चीज़ों के बारे में बात करता है, तो हमारे लिए यह स्पष्ट है कि हम उसी संसार में रहते हैं जिसमें पवित्र शास्त्र के पहले श्रोताओं ने वास किया था।

और इससे भी अधिक विशिष्ट और संकीर्ण तरीकों में, हम पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं के संसार और हमारे संसार के बीच महत्वपूर्ण समानांतरों को पाते हैं। उदाहरण के लिए, निर्गमन 20 में इस्राएल को दी गई दस आज्ञाओं ने बाकी के पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के जीवनों के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि को प्रदान किया। नए नियम में उसके लोगों के जीवनों का मार्गदर्शन करने के लिए इन्ही आज्ञाओं का फिर से उपयोग किया गया। और जैसा कि पौलुस ने 2 तीमुथियुस 3:16, 17 में सिखाया, इन्हीं आज्ञाओं ने आज भी कलीसिया का मार्गदर्शन करना जारी रखा है।

इसी तरह से, परमेश्वर के लोगों के लिए एक स्थायी राजवंश के मुखिया के रूप में दाऊद परमेश्वर की पसंद बना तथा पुराने नियम में परमेश्वर के राज्य के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रदान किया, साथ में नए नियम में दाऊद के महान पुत्र के रूप में यीशु की राजशाही के लिए पृष्ठभूमि को भी। और जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 22:16 जैसे स्थानों में सीखते है, दाऊद के वंश से आने वाले राजा के रूप में उसके स्थायी शासन के कारण कलीसिया ने हमारे राजा और प्रभु के रूप में यीशु की सेवा जारी रखी है।

जैसा कि इनके जैसे उदाहरण दिखाते हैं, हमारे संसार और पवित्र शास्त्र के पहले श्रोताओं के काल के बीच संबंध हमें बाइबल के उचित आधुनिक अनुप्रयोगों को निर्धारित करने में मदद कर सकते हैं।

अब जबकि हमने देख लिया है कि पवित्र शास्त्र के सभी श्रोताओं का एक ही परमेश्वर है और वे एक जैसे संसार में रहते हैं, तो आइए उन संबंधों पर विचार करें जो इस कारण अस्तित्व में हैं क्योंकि हम एक ही तरह के लोग हैं।

लोग

ऐसे कम से कम तीन तरीके हैं जिनमें आधुनिक लोग उन लोगों से मिलते-जुलते हैं जिन्होंने पवित्र शास्त्र को सबसे पहले प्राप्त किया था। सबसे पहले, सभी मनुष्य, चाहे वे कभी भी या कहीं भी रहे हों, वे परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी पापी हैं। दूसरा, हम धार्मिक विभाजनों से पीड़ित हैं। और तीसरा, मानवता में अभी भी लोगों के समान वर्ग शामिल हैं। हम इन सभी समानताओं की खोज करेंगे, जो इस तथ्य के साथ शुरू होते हैं कि सभी मनुष्य परमेश्वर के पापी स्वरूप हैं।

पापी स्वरूप

उत्पत्ति 1:27 जैसे पदों में, हमें बताया गया है कि जब परमेश्वर ने मानवता की रचना की, तो उसने हमें अपने स्वरूप में बनाया। अन्य बातों के अलावा, इसका अर्थ यह है कि सभी मनुष्य परमेश्वर के बुद्धि-संपन्न, भाषाई, नैतिक और धार्मिक उप-राज्य-प्रतिनिधि हैं।

इसी समय पर, सभी मनुष्य पाप में पतित भी हैं। मानवता को जिस तरीके से आज हमारे तर्क-संपन्न, भाषाई, नैतिक और धार्मिक क्षमताओं का उपयोग करके परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए वैसा नहीं करती है। अविश्वासी ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे कि उन्हें परमेश्वर के राज्य के अधीन समर्पण करने की आवश्यकता नहीं है। और विश्वासी भी उसके प्रति अपनी निष्ठा में असफल हो जाते हैं। जैसा कि 1 राजा 8:46 में मंदिर के समर्पण के समय सुलैमान ने कहा:

> निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है (1 राजाओं 8:46)।

> व्यवस्थित ईश्वरीय-ज्ञान में, आप जानते हैं, इस शिक्षा को संपूर्ण भ्रष्टता के रूप में जाना जाता है। और उसका अर्थ यह है कि मनुष्य के अस्तित्व की समग्रता में, उसकी सोच,

> भावना और व्यवहार में, सब कुछ पाप से इतना दूषित हो चुका है कि एक बुनियादी धारणा यह बन गई है कि जो भी कुछ वह करता है, उसे वह परमेश्वर की आज्ञाओं और पवित्र मानक की अवहेलना में करता है। तो हाँ, पापी स्वभाव जैसी कोई चीज़ तो है। और बाइबल इस बारे में बात करती है कि यह समस्या कितनी बुनियादी है, विशेष रूप से परमेश्वर के साथ संबंधों में।
>
> — डॉ. लूईस औरटेज़ा

> मानव-विज्ञान और समाजशास्त्रीय अध्ययनों में इन दिनों विशेष रूप से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक यह है कि क्या मनुष्यों के पास पापी स्वभाव है। और वर्षों के दौरान, बार-बार, मानव शिक्षा, मानव विकास, मानव शिक्षण के बारे में सिद्धांत मूल पाप की चट्टान में धंस जाता है, क्योंकि तथ्य यह है कि हम सभी में पाप में पतित स्वभाव पाया जाता है ... वास्तव में इसका अर्थ है, कि हम मनुष्य सिद्धि, उपलब्धि, अधिपत्य के लिए एक स्वार्थी इच्छा के द्वारा नियंत्रित होते हैं, और यह उन सब चीज़ों को विकृत करती है जो हम करते हैं। यदि आप मानते हैं कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से अच्छे हैं तो आप मानव व्यवहार को समझ नहीं सकते हैं। वास्तव में, जब आप मानवजाति के इतिहास पर नज़र डालते हैं, तो आपको कहना होगा कि, नहीं, हम स्वाभाविक रूप से अच्छे नहीं हैं; हम स्वाभाविक रूप से दुष्ट उर अहंकार से भरे हुए हैं। हालाँकि, बाइबल के बारे में दिलचस्प बात यह है कि, यहीं पर वह यह भी कहता है, कि हम परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं। और यह, मेरे विचार में, मानवता के लिए बाइबल के दृष्टिकोण की उत्कृष्टता है, क्योंकि कई अन्य मानव-विज्ञानी और समाजशास्त्री, बुराई की उपस्थिति को पहचानते हुए कहेंगे, “ओह, मनुष्य सुधार से दूर निराशाजनक रूप से बुरे हैं; हम बस बंदरों में सबसे अधिक आक्रामक हैं, बस इतना ही। और बाइबल कहती है, “ओह, नहीं, हम पाप की दश में हैं, लेकिन बिगड़े हुए होते हुए भी हम परमेश्वर के स्वरूप में हैं।”
>
> — डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

पवित्र शास्त्र के सभी प्राप्तकर्ता, चाहे प्राचीन या आधुनिक, इसी पापी स्वभाव को साझा करते हैं। और एक तरीके या अन्य से, पवित्र शास्त्र के हर एक भाग के मूल अर्थ ने इस मानव स्थिति को संबोधित किया। हम सब परमेश्वर के स्वरूप हैं जो पाप से भ्रष्ट हो गए हैं। क्योंकि हम पवित्र शास्त्र के सभी मूल श्रोताओं के साथ इन गुणों को साझा करते हैं, इसलिए ये समानताएँ हमें बाइबल के हर एक पाठ्यांश से सार्थक आधुनिक अनुप्रयोगों को निकालने में मदद कर सकते हैं।

पवित्र शास्त्र के मूल और आधुनिक श्रोता परमेश्वर के पापी स्वरूप होने के अलावा, इसलिए भी समान हैं क्योंकि हम दोनों धार्मिक विभाजनों से पीड़ित हैं।

धार्मिक विभाजन

जिस समय से पहले पवित्र शास्त्र प्रेरित हुए थे, तब से यह हमेशा से होता रहा है कि पवित्र शास्त्र के पाठक तीन धार्मिक समूहों में से एक में पाए जाते हैं: अविश्वासी, झूठे विश्वासी, और विश्वासी।

अविश्वासी वे लोग हैं जो परमेश्वर के प्रति समर्पण करने से इंकार करने के द्वारा स्वयं को उसका शत्रु बना लेते हैं। मानवता के इस विभाजन में उन सभी को शामिल किया गया है जिन्होंने इस्राएल और कलीसिया के लिए परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के बारे में नहीं सुना है, साथ में वे भी जिन्होंने सुना है।

झूठे विश्वासी परमेश्वर के लिए आभासी प्रतिबद्धताएँ बनाते हैं। बाहरी दिखावट से वे विश्वासी लग सकते हैं, लेकिन उनके पास सच्चा विश्वास नहीं है, और परिणामस्वरूप उन्हें उसके अनंत न्याय से छुटकारा नहीं मिला है।

इसके विपरीत, विश्वासी वे लोग हैं जो परमेश्वर के प्रति वफादार, विश्वासयोग्य प्रतिबद्धताएँ बनाते हैं और इस प्रकार जिन्हें पाप से छुटकारा मिला है और परमेश्वर के अनंत न्याय से बचाया गया है।

सामान्य शब्दों में, इन तीन धार्मिक समूहों के लिए पवित्र शास्त्र के आधुनिक अनुप्रयोगों को, इन्ही के जैसे समूहों के लिए मूल अनुप्रयोगों के बिल्कुल समान होना चाहिए। अविश्वासियों के लिए, पवित्र शास्त्र को पाप रोकने के लिए, उनकी खोई हुई दशा को उजागर करने के लिए, और बचाने वाले पश्चाताप के लिए उन्हें बुलाहट देने के लिए डिजाइन किया गया था; आधुनिक अनुप्रयोग में, हम ऐसा ही करते हैं। झूठे विश्वासियों के लिए, बाइबल के वचनों को पाप रोकने के लिए, उनके पाखंड को उजागर करने और बचाने वाले पश्चाताप के लिए बुलाहट के लिए डिजाइन किया गया था; आधुनिक अनुप्रयोग में, हम इसी लक्ष्य की ओर काम करते हैं। विश्वासियों के लिए, बाइबल के लेखों को उनके पाप पर लगाम लगाने के लिए, विफलता के खिलाफ चेतावनी देने, और परमेश्वर के अनुग्रह में कृतज्ञ जीवन जीने में उनकी अगुवाई करने के लिए डिजाइन किया गया था; और आधुनिक मसीहों के रूप में, हम इन्हीं लक्ष्यों की ओर पवित्र शास्त्र को लागू करते हैं।

पापी स्वरूपों और धार्मिक विभाजनों से पीड़ित होने के अलावा, मूल और आधुनिक श्रोता इसलिए भी एक समान हैं क्योंकि पूरे इतिहास के दौरान लोगों के एक जैसे वर्ग मौजूद रहे हैं।

वर्ग

मनुष्यों को कई अलग-अलग तरीकों से वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, हमारे पास विशेष गुण या विशेषता के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है। कुछ लोग बुढ़े हैं और दूसरे जवान हैं; कुछ पुरुष हैं और अन्य महिलाएं हैं; कुछ अमीर हैं और दूसरे गरीब हैं; कुछ शक्तिशाली हैं और अन्य कमजोर हैं इत्यादि वर्ग देखा जा सकता है। हमें दूसरे लोगों के साथ हमारे संबंधों के अनुसार भी वर्गीकृत किया जा सकता है। हम माता-पिता, बच्चे, भाई-बहन, स्वामी, नौकर, दोस्त या कुछ भी हो सकते हैं। या जो हमने किया है, उसके अनुसार हमें वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे नायक और अपराधी; या हमारी नौकरियों के अनुसार, जैसे कोई पादरी होगा और कोई किसान का काम करता होगा। और यही बात पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं के लिए भी सही थी।

वास्तव में, पवित्र शास्त्र के कई भाग विशेष रूप से लोगों के विशेष वर्गों की ओर निर्देशित हैं। हम ऐसे अनुच्छेदों को पाते हैं जो उन लोगों पर ध्यान केंद्रित है जो क्रोधित है, प्रेम करने वाले है, या आलसी हैं, या पश्चातापी हैं, या अमीर या गरीब हैं। हम ऐसे अनुच्छेदों को भी पाते हैं जो विशेष रूप से उन लोगों को संबोधित करते हैं जो कि पतियों, या पत्नियों, या बच्चों, या सेवकों, या चोरों, या कर्मचारियों के रूप में पहचाने गए हैं।

क्योंकि लोगों के यही वर्ग हर युग में मौजूद रहे हैं, इसलिए वे मूल श्रोताओं और बाद के सभी श्रोताओं के बीच सार्थक संबंधों को बनाते हैं। और ये संबंध हमारे अनुप्रयोग का मार्गदर्शन करने में मदद करते हैं। प्राचीन और अमीर लोग धन के बारे में अनुच्छेदों से एक समान अनुप्रयोगों को बना सकते हैं। प्राचीन और आधुनिक अगुवे नेतृत्व के बारे में अनुच्छेदों से एक समान अनुप्रयोग बना सकते हैं। बाइबल को हमारे जीवनों

में लागू करने के लिए हमारे सभी प्रयासों की मदद इस बात को पहचानने के द्वारा की जा सकती है कि हम पवित्र शास्त्र के पहले श्रोताओं के साथ इसी प्रकार के संबंधों को साझा करते हैं।

अब जबकि हमने पवित्र शास्त्र के अनुप्रयोग की अनिवार्यता का पता, और मूल एवं आधुनिक श्रोताओं के बीच कुछ महत्वपूर्ण संबंधों पर विचार कर लिया है, आइए मूल और आधुनिक श्रोताओं के बीच उन विकासों पर अपना ध्यान लगाएं जिन्हें हमारे अनुप्रयोगों को प्रभावित करना चाहिए।

विकास

बहुत से लोग जो बाइबल को ध्यान से पढ़ते एवं अध्ययन करते हैं, वे कहते हैं कि कभी-कभी यह अप्रसांगिक लगती है, जैसे कि यह एक अलग संसार से आई हो, और एक बहुत ही वास्तविक मायने है जिसमें यह सच है। बाइबल की पुस्तकों को बहुत समय पहले लिखा गया था। वे ऐसी भाषाओं में लिखे गए थे, जिन्हें हम में से अधिकतर लोग नहीं पढ़ते हैं, और ऐसी संस्कृतियों को जो हमारे से बहुत अलग हैं। और हमारे अपने निजी जीवन भी पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं वाले लोगों के जीवनों से बहुत अलग हैं। इसलिए, एक या अन्य तरीके से, जब हम बाइबल को आधुनिक जीवन के लिए लागू करते हैं तो हमें इन सभी कारकों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

बाद के एक अध्याय में, हम इस प्रकार के अंतरों को ध्यान में रखने के विशिष्ट तरीकों को देखेंगे। इसलिए अभी के लिए, हम सिर्फ उन तीन प्रमुख प्रकारों के विकासों की पहचान करेंगे जो तब से घटित हुए हैं जब से पवित्र शास्त्र को प्रेरित किया गया था, और जिसका ध्यान बाइबल की पुस्तकों के हमारे आधुनिक अनुप्रयोग में रखने की आवश्यकता है: युगांतरिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत विकास। आइए सबसे पहले छुटकारे के इतिहास में युगांतरिक विकासों को देखें।

युगांतरिक

मसीही लोगों ने अक्सर तीन चरणों में संसार के इतिहास पर बाइबल के परिप्रेक्ष्य को सारांशित किया है: सृष्टि, जब परमेश्वर ने पहली बार संसार को बनाया; पाप में पतन, जब मानवता ने पहली बार पाप किया और परमेश्वर द्वारा उसे शाप दिया गया; और छुटकारा, पाप में पतन के बाद की अवधि, जिसमें परमेश्वर हमें हमारे पाप से छुटकारा देता है। आदम और हव्वा के पाप में गिरने के तुरंत बाद, परमेश्वर ने छुटकारे की एक लंबी, धीमी प्रक्रिया शुरू की। और पूरे सहस्राब्दियों के दौरान, उसने दयालुतापूर्वक छुटकारे के अपने राज्य को शापित सृष्टि के भीतर और साथ-साथ बनाया।

कई धर्मविज्ञानियों ने माना है कि सृष्टि के ऊपर परमेश्वर के राज्य की प्रगतिशील प्रकृति के कारण आवधिक विकास हुए हैं जो पवित्र शास्त्र में वर्णित विभिन्न युगों के बीच विच्छिन्नता को पैदा करते हैं। शायद सबसे स्पष्ट युगांतरिक विकास पुराने और नए नियमों के बीच हुआ। लेकिन धर्मविज्ञानी आमतौर पर पूरे बाइबल में परमेश्वर की विभिन्न वाचाओं के अनुसार युगों की पहचान करते हैं, विशेष रूप से जो पुराने नियम में आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ, और नए नियम में यीशु के साथ जुड़े हैं।

उदाहरण के लिए, प्रायश्चित वाले बलिदान के संबंध में नियमों ने छुटकारे के इतिहास में, विभिन्न समयों पर विभिन्न चीज़ों की अपेक्षा की थी। मूसा के समय में, उन्होंने मिलाप वाले तम्बू में बलिदान की

अपेक्षा की थी। सुलैमान के दिनों, उन्होंने मंदिर में बलिदान की अपेक्षा की थी। शुरूआती नए नियम में, उन्होंने क्रूस पर यीशु की मृत्यु की अपेक्षा की थी। और बाद के नए नियम में, उन्हें चढ़ाना पूरी तरह से समाप्त हो गया।

> जब हम विशेष रूप से, एक विश्वासी होने के नाते पुराने नियम को पढ़ते हैं — इसके बाद जब मसीह मर गया और पुनर्जीवित हुआ और वापस आने के लिए तैयार है — जिस तरह हम कभी-कभी पवित्र शास्त्र को समझते और लागू करते हैं उसे पुराने नियम के लोगों द्वारा शायद इसे लागू करने के तरीके से अलग होना चाहिए। लेकिन, निश्चित रूप से, कई बार ऐसा भी होता है, जिसमें हमें वास्तव में कोई समायोजन नहीं करना पड़ता है ... इसलिए उदाहरण के लिए बलिदान की प्रणाली को लें। हमें अब बलिदान देने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि मसीह अब हमारा बलिदान है। तो इस मायने में बहुत थोड़ा अनुप्रयोग है। मुझे मंदिर जाने की आवश्यकता नहीं है ... पास के किसी मंदिर में जानवर को वध करने के लिए और उस जानवर पर मैं हाथ रखुं ताकि जानवर मेरे सभी पापों को उठा सके। इसलिए, हाँ, ऐसे समय होते हैं, जिनमें हम जहाँ पर आज छुटकारे के इतिहास में हैं, वह उस तरीके को बदल देता है जिसमें हम पवित्र शास्त्र को लागू करेंगे।
>
> — डॉ. डैनियल एल. किम

> यह इतना महत्वपूर्ण है कि जब हम इसकी व्याख्या करते और अपने जीवनों पर लागू करते हैं तो इस बात का जायजा ले कि छुटकारे के इतिहास में जहाँ हम है उसकी तुलना में कोई अनुच्छेद छुटकारे के इतिहास में कहाँ घटित हुआ है, क्योंकि यह एकदम स्पष्ट है कि कुछ अनुच्छेद अपने छुटकारे वाले ऐतिहासिक संदर्भ में एक अलग प्रणाली को शामिल करते हैं, हमारे स्वयं के संदर्भ की तुलना में चीज़ों का एक अलग प्रबंधन। मैं बस एक साधारण उदाहरण दूँगा ... पुराने नियम में बलिदान वाली प्रणाली ... जानवरों के बलिदान के बारे में पुराने नियम के अनुच्छेद हमारे लिए अप्रासंगिक नहीं हैं, लेकिन वे उस हद तक प्रासंगिक हैं जहाँ कि वो बलिदान मसीह में पूरे हो गए हैं। इसलिए जब हम उन पाठ्यांशों को पढ़ते हैं, तो हमारा निष्कर्ष यह नहीं है, ओह, मुझे कहीं से एक मेमना, एक बैल या एक कबूतर खोजने की आवश्यकता है, लेकिन मुझे अपने पाप को ढांपने के लिए मसीह की ओर देखने की आवश्यकता है। और इसलिए कई मायनों में — यह सिर्फ एक स्पष्ट उदाहरण है — लेकिन जब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं तो कई तरीकों में, हमें तथ्य का जायजा लेने की आवश्यकता है: ओह यह छुटकारे के इतिहास के प्रबंधन के पुरानी वाचा वाले पहलू में हो रहा है। उदाहरण के लिए, हम अब ईश्वर-तंत्र में नहीं रहते हैं, इसलिए ऐसी चीज़ें हैं जो इस्राएल के जीवन के लिए सच हुई होती जो आज एक विश्वासियों के रूप में हमारे जीवनों के लिए सच नहीं हैं। हम हमेशा किसी अनुच्छेद के न सिर्फ तत्काल व्याकरणिक संदर्भ को ध्यान में रखना चाहते हैं बल्कि साथ में इसके छुटाकारे वाले ऐतिहासिक संदर्भ को भी ताकि हम नई वाचा के बाद की वास्तविकता वाली अपनी स्थिति में विश्वासियों के लिए उचित अनुप्रयोग बना सकें।
>
> — डॉ. रॉबर्ट जी लिस्टर

कई मायनों में, बाइबल का इतिहास एक विकसित होते पेड़ के समान है। हर एक पेड़ किसी बीज से बढ़ता है, छोटा पौधा बन जाता है और अंततः एक पूर्ण विकसित पेड़ में बदल जाता है। आगे जाकर जो वह पेड़ बनेगा वह शुरूआती बीज में निहित होता है। लेकिन पूरी तरह से परिपक्व होने के लिए पेड़ को समय के साथ बढ़ना और विकसित होना है।

उसी तरह से, पूरे बाइबल के इतिहास में छुटकारा की योजना या अवधारणा धीरे-धीरे बढ़ी और विकसित हुई है। और जब हम बाइबल को अपने जीवनों पर लागू करते हैं तो हमें इन विकासों को ध्यान में रखना है। विकासक्रम का यह मॉडल हमें सिखाता है कि संपूर्ण बाइबल हमारे लिए प्रासंगिक और आधिकारिक है, लेकिन यह भी कि पुराने प्रकाशन को हमेशा बाद वाले प्रकाशन के प्रकाश में लागू किया जाना चाहिए।

युगांतरिक विकासों की इस समझ को ध्यान में रखकर, आइए उन सांस्कृतिक विकासों के विचार का पता लगाएं जो आज हमारी संस्कृतियों को बाइबल में सीधे तरीके से संबोधित की गई संस्कृतियों से अलग करते हैं।

सांस्कृतिक

पवित्रशास्त्र के मूल और आधुनिक श्रोताओं के बीच सांस्कृतिक विकास के बारे में सोचने पर, हमें समानताओं और अंतर दोनों को पहचानने की आवश्यकता है। समानताओं के संबंध में, हमें ऐसे प्रश्नों को पूछने की आवश्यकता है जैसे "हम ऐसे किन सांस्कृतिक पैटर्न का सामना करते हैं जो अब्राहम के अनुभव के साथ बारीकी से समानांतर हैं?" और "कैसे हमारी संस्कृति दाऊद के समय की संस्कृति के समान है?" और अंतरों के संबंध में, हमें ऐसे प्रश्नों को पूछने की आवश्यकता है जैसे "पुराने नियम के प्राचीन समाजों से मानव संस्कृति में कितना बदलाव आया है?" और "कौन से रीति-रीवाज़ और प्रथाएं अलग हैं?" आज जिस तरह से हम पवित्र शास्त्र को लागू करते हैं, उसके लिए इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तरों के महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं।

> जिस संस्कृति में बाइबल लिखी गई थी वह स्पष्ट रूप से स्वयं हमारी संस्कृति से बहुत भिन्न थी। हम में से कई कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में नहीं रह रहे हैं। कुछ लोग हैं, लेकिन हमारे लिए पश्चिम में निश्चित रूप से ऐसा नहीं है। और इसलिए हमें कुछ बदलावों को करने की आवश्यकता है। और न ही हम 1000 ई.पू. में रहे हैं जहां बैतलहम के बाहर शहर के गेट पर व्यापार किया जाता था – इसके बारे में आप रूत की पुस्तक में पढ़ सकते है। और आप जानते हैं कि आपने उन दिनों में कैसे कानूनी अनुबंध किया जाता था? आपको अपना जूता उतारना होता और आपने उसके आधार पर एक दूसरे से हाथ मिलाते। ठीक है, निश्चित रूप से, यह थोड़ा विचित्र है। हम एक अलग संस्कृति में रहते हैं जहाँ आप अनुबंध पर हस्ताक्षर करते हैं और आपके पास अलग तरह का करार नामा हैं। विभिन्न संस्कृतियों में व्यवसाय करने के, पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंध को संचालित करने के लिए अलग-अलग तरीके होते होंगे। सभी प्रकार की चीजों की अलग-अलग सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां होती होंगी। हमें बस उनके प्रति सहानुभूति रखनी है और एहसास करना है कि बाइबल में चीजों को करने का अपना तरीका है। हम ऐसी संस्कृतियों में रहते हैं जहाँ चीजें अलग तरीके से की जाती हैं। हालाँकि, बाइबल ने हमें इस बात के सिद्धांत दिए हैं कि हमें अपना व्यवसाय कैसे करना चाहिए; हमें इसे ईमानदारी के साथ करना चाहिए। आप इसे रूत

की पुस्तक से पढ़ सकते हैं। और इसलिए हमें अपने व्यापार व्यवहार में नैतिक ईमानदारी के सिद्धांत को लागू करना होगा, भले ही हम अपने जूते उतार कर न दें जैसा कि उन्होंने किया था।

— डॉ. पीटर वॉकर

जब हम स्वयं अपनी वर्तमान परिस्थिति के बारे में विचार करते हैं और इसकी तुलना मूल श्रोताओं के समय से करते हैं, तो हमें यह समझना होगी कि कम से कम 2000 वर्ष पीछे नए नियम का समय और अक्सर 3000 वर्ष पीछे पुराने नियम का समय बीत चुका है। इसलिए अंतर, सांस्कृतिक अंतर हो सकते हैं, जो हमें मूल श्रोताओं के अनुभव से अलग करते हैं। सबसे स्पष्ट में से एक यह है कि प्रौद्योगिकी नाटकीय रूप से बदल गई है। इसलिए, उदाहरण के लिए, हम एक अत्यधिक दृश्यवाली संस्कृति, एक ऐसी संस्कृति है जो संचार की तीव्र गति की आदी हो चुकी है, एक ऐसी संस्कृति जो दूसरों से बातचीत करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में बहुत अधिक सलंग्न है। और प्राचीन काल में, बस सोच रहा हूँ 2000 वर्ष पहले, जब यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा, उसने इसे एक चक्रिए पत्र के रूप में ऐसा किया जहाँ एक व्यक्ति इसे एक समुदाय से दूसरे समुदाय तक ले जाने वाला था। इसने संभवतः कई दिनों का समय लिया जब उसने कलीसिया से कलीसिय से कलीसिया तक यात्रा की। वहाँ उस तरह का त्वरित संचार नहीं था। इसका एक और पहलू, जो कि बहुत स्पष्ट है जब आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिए सोचते हैं, वह है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मुख्य रूप से सुनने के लिए थी। इसलिए, पुस्तक के एकदम शुरूआत में यह कहता है कि एक आशीष है जो उस व्यक्ति पर जो पढ़ रहा है और उन लोगों पर जो सुन रहे हैं सुनाया जाता है, जो कि उस बात का संकेत है जैसा इसे मूल रूप से समझा गया था, जो था, कि एक व्यक्ति पूरी पुस्तक को शुरू से अंत तक श्रोताओं के लिए पढ़ता था। हमारे लिए, जब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पूरा पढ़ते हैं तो धीमा पड़ जाना बहुत सामान्य बात है। हम किसी पद पर रुक कर मनन कर सकते हैं और जो कुछ भी इसका अर्थ है उसे समझने की कोशिश कर सकते हैं। जबकि, मूल श्रोताओं के लिए, सारे के सारे 22 अध्याय एक साथ उनके लिए पढ़े जाते थे। इसलिए, पुस्तक का अनुभव बहुत अलग है। और मुझे लगता है कि प्रत्यक्ष परिणामों में से एक है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के मूल श्रोता शायद अभिभूत हो जाते थे, सब कुछ तो समझ नहीं पाते होंगे और कुछ बिंदुओं पर उन्हें विवरण का पता लगाने के बारे में कम चिंता करनी पड़ती थी और इसके बजाय पूरे के सामान्य अभिप्राय को समझते थे और उनकी स्वयं की भावनाओं से वास्तव में पूरे को बात करने की अनुमति देते थे। और सब कुछ पता लगाने में सक्षम होने के बजाय स्वयं हमारे हृदय की वास्तविकता के संबंध में तस्वीरें व्यक्ति को अधिक से अधिक प्रभावित करने लगती हैं। इस प्रकार, यह एक उदाहरण है कि कैसे सांस्कृतिक अंतर वास्तव में हमारी समझ और पवित्र शास्त्र को पढ़ने के हमारे दृष्टिकोण को बदल सकता है।

— डॉ. डेविड डब्ल्यू. चैपमैन

युगांतरिक और सांस्कृतिक विकासों के अलावा, हमें उन व्यक्तिगत विकासों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है जो आज के लोगों को बाइबल के मूल श्रोताओं से अलग करते हैं।

व्यक्तिगत

बाइबल के लोगों और हमारे समकालीन संसार में रहने वाले लोगों के बीच बहुत समानताएँ हैं, लेकिन हमें यह भी पहचानने की आवश्यकता है कि आधुनिक और प्राचीन लोगों के बीच में कई अंतर भी हैं। और यदि हम बाइबल के पाठ्यांश को ठीक रीति से लागू करने की अपेक्षा करते हैं, तो हमें इन व्यक्तिगत विविधताओं को ध्यान में रखना होगा।

उदाहरण के लिए, हमें कुछ ऐसे प्रश्नों को पूछना चाहिए जैसे "हमारे निजी जीवनों की तुलना उनके साथ कैसे की जाती है जिन्हें हम बाइबल में देखते हैं?" "समाज में हमारी क्या भूमिका है?" "हमारी आत्मिक दशा कैसी है?" "इस व्यक्ति या उस व्यक्ति की तुलना में हम प्रभु की सेवा कैसे करते हैं?" "हमारे विचारों, कार्यों और भावनाओं की तुलना उन लोगों के साथ कैसे की जाती है जिन्हें हम बाइबल के लेखकों में देखते हैं?" प्राचीन लोगों और आधुनिक लोगों के बीच अंतरों को ध्यान में रखने से, हम इस बात को बेहतर समझ सकते हैं कि बाइबल को हमारे स्वयं के जीवनों की विशिष्ट परिस्थितियों में कैसे लागू किया जाए।

पवित्र शास्त्र के मूल और आधुनिक श्रोताओं के बीच के युगांतरिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत विकास को पहचानना हमारे समय में बाइबल को लागू करने का सबसे चुनौतीपूर्ण पहलू हो सकता है। लेकिन यदि हम इसे सावधानीपूर्वक करते हैं, तो यह उन तरीकों में पवित्र शास्त्र को लागू करने में हमारी मदद करने की ओर बहुत उपयोगी होंगे जो परमेश्वर के प्रति सम्मान, दूसरों के प्रति जिम्मेदारी और हमारे समय के लिए उपयुक्त हैं।

उपसंहार

पवित्र शास्त्र को लागू करने पर इस अध्याय में, हमने तीन बुनियादी कारकों का पता लगाया जो हमारे आधुनिक परिस्थितियों के साथ बाइबल के मूल अर्थ को जोड़ने में हमारी मदद कर सकते हैं। हमने पवित्रशास्त्र के आधुनिक अनुप्रयोगों को बनाने की अनिवार्यता पर बात की है। हमने मूल और आधुनिक श्रोताओं के बीच संबंध पर चर्चा की है जो हमें यह निर्धारित करने में मदद करते हैं कि पवित्र शास्त्र को कैसे लागू किया जाए। और हमने कुछ उन विकासों पर जो उस समय से हुए जब पवित्र शास्त्र लिखा गया था, उन तरीकों पर विशेष ध्यान देते हुए विचार किया है जिनमें ये विकास समकालीन श्रोताओं के लिए हमारे अनुप्रयोगों को अनुकूलित करने के लिए हमें बाध्य कर सकते हैं।

हमें हमेशा स्वयं को याद दिलाने की आवश्यकता है कि पवित्र शास्त्र को बाद की पीढ़ियों द्वारा अलग या दूर रखने के लिए नहीं लिखा गया था। इसके विपरीत, वे परमेश्वर के लोगों के लिए पूरे इतिहास भर में प्रेम और आज्ञापालन हेतु लिखे गए थे। और इस कारण से, बाइबल हमारे समय में उतनी ही प्रासंगिक है, उतनी ही सत्य है जितना यह तब थी जब यह पहली बार लिखी गई थी। हमें उन विकासों का आकलन करना होगा जो

बाइबल के और स्वयं हमारे समयों के बीच हुए हैं, लेकिन जब हम ऐसा करते हैं, तो हम न सिर्फ अतीत में उसके लोगों के लिए, बल्कि आज जीवित उसके लोगों के लिए भी परमेश्वर की इच्छा को समझ सकते हैं।